

30. ज्योतिबा फुले

सतारा जिले के कडगुण गांव में ज्योतिबा फुले का जन्म सन् 1827 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम गोविन्द राव तथा माता का नाम चिमणाबाई था। ज्योतिबा को मां का प्यार नहीं मिल पाया। एक गम्भीर बीमारी के कारण वे चल बसीं। तब ज्योतिबा केवल नौ महीने के थे। उनके पालन पोषण का दायित्व उनकी मौसेरी बहन सगुणाबाई ने लिया। सगुणाबाई विधवा थी। मायके में भी उन्हें कोई सहारा देने वाला न था। पर वे साहसी थी और संघर्षों से जूझना जानती थीं। वे एक अंग्रेज के बच्चों को संभालने की नौकरी करती थी। इन्हीं अंग्रेज बच्चों के साथ ज्योतिबा का विकास होने लगा।

गोविन्द राव ने ज्योतिबा को पढ़ाने का काम विनायक राव जोशी को सौंपा। मराठी के साथ उसने गणित भी सीख लिया। पाठशाला में उसे प्रवेश करवाने पर गोविन्द राव को भारी विरोध का सामना करना पड़ा। जात-बिरादरी से निकाले जाने के भय से उन्होंने नौ वर्षीय ज्योतिबा को स्कूल से निकलवा लिया। अब वह पिता के साथ खेती का काम करने लगा। पढ़ने की इच्छा मन में थी। यह किशोर दिन भर खेतों में काम करता और रात को लैंप के प्रकाश में पढ़ता रहता। ज्योतिबा के पढ़ाई के लगाव तथा सगुणाबाई के अनुरोध पर ज्योतिबा को मिशन स्कूल में दाखिल किया गया।

किसी तरह ज्योतिबा ने अपनी पढ़ाई पूरी की। उन दिनों जातिवाद और शूद्र समस्या व्यापक थी। लोग अशिक्षित थे। अशिक्षा ही उनकी समस्याओं को जन्म दे रही थी। ज्योतिबा ने शिक्षा के प्रसार का निश्चय किया। सन् 1848 ई० में उन्होंने लड़कियों के लिए एक पाठशाला खोली। लड़कियों को स्कूल भेजना उन दिनों धर्म-विरोधी माना जाता था। बड़ी कठिनाई से छः लड़कियाँ पाठशाला में प्रवेश ले सकीं। अनेक परेशानियाँ आईं। यहां तक कि ज्योतिबा और उनकी पत्नी को जाति से अलग कर दिया गया। पर वे विचलित न हुए। चार वर्षों में ज्योतिबा ने पुणे में अठारह पाठशालाएं खोलीं। ये शालाएं उन लोगों के लिए थी जिनके लिए सदियों से विद्या मंदिर के द्वार बंद थे।

स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा द्वारा किए गए कार्यों को सरकार ने मान्यता दी और उन्हें सम्मानित किया। पुणे कॉलेज के मेजर कैंडी ने सरकार की ओर से एक शाल भेंट कर ज्योतिबा फुले का अभिनन्दन किया। अपने भाषण में मेजर कैंडी ने कहा-‘शिक्षा बोर्ड, लंदन कोर्स और ब्रिटिश सरकार ज्योतिबा फूले के प्रशंसक हैं। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से नारी शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किया है। उन्होंने इस दिशा में एक कीर्तिमान भी स्थापित किया है। सरकार और हम सब उन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।’

ज्योतिबा ने ज्ञान की ज्योति जला दी थी। उनकी सभी शालाओं को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया।

उन दिनों स्त्रियों पर तरह-तरह के प्रतिबंध थे। विधवा सिर के केश नहीं रख सकती थी। दूसरे विवाह की बात तो स्वप्न में भी नहीं सोची जा सकती थी। ज्योतिबा ने विधवा विवाह करवाने की योजना बनाई। उनका विचार था कि विधवाओं का फिर से विवाह करवाना एक सामाजिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि हिन्दू धर्म ग्रन्थों में विधवा के पुनः विवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं है। उन्होंने कई विधवाओं के विवाह करवाए तथा बाल विवाह प्रथा का विरोध किया।

अछूतों को सार्वजनिक कुएं से पानी नहीं भरने दिया जाता था। ज्योतिबा ने अपना कुआं सभी के लिए खोल दिया। उन्होंने छुआछूत दूर करने के लिए व्यापक प्रचार किया। पिता का श्राद्ध भी उन्होंने भिखारियों को भोजन खिलाकर किया। गरीब और हरिजन छात्रों को पुस्तकें व अन्य सामग्री भी बाँटी। उसके बाद प्रतिवर्ष वे पिता का श्राद्ध इसी तरह करते रहे।

1876 ई० में ज्योतिबा पुणे नगरपालिका के सदस्य बने। अब उन्होंने अछूत समझे जाने वाले लोगों को पेयजल व्यवस्था की मांग की। 1882 तक वे पालिका सदस्य रहे। इस दौरान उन्होंने गरीबों की भलाई के लिए अनेक प्रस्ताव पारित करवाए। पालिका के धन का सही उपयोग हो इस पर वे सदा सतर्क रहते थे।

मजदूरों और गरीब किसानों के शोषण के विरुद्ध उन्होंने सरकार से कई बार टक्कर ली। 1883 में उन्होंने मराठी में एक पुस्तक लिखी थी जिसमें बताया गया था कि किसान कितने गरीब, अशिक्षित और धर्मभीरू हैं। इस पुस्तक में अंग्रेजों की नीतियों की भी आलोचना की थी। नमक पर कर लगाने का भी उन्होंने विरोध किया था। महाराजा गायकवाड़ 1881 में गद्दी पर बैठने के बाद पुणे आए थे तब ज्योतिबा भी उनसे मिले और किसानों की समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने किसानों पर लगाए करों का विरोध किया तथा सरकार से मांग की कि किसानों को पानी उपलब्ध कराया जाए।

ज्योतिबा ने सत्य शोधक समाज नामक संस्था की स्थापना की। यह संस्था सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करने लगी। उन्होंने दीनबन्धु नाम से एक साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित किया। कुछ पुस्तकें लिखी। स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपना योगदान दिया। सन् 1890 में उनका देहान्त हो गया। सत्य ही ईश्वर है तथा मानवता ही धर्म है। परस्पर सहयोग ही नीति है। इस सिद्धान्त पर चलते हुए वे जीवन पर्यन्त संघर्ष करते रहे।

* अभ्यास *

1. ज्योतिबा फुले की शिक्षा में व्यवधान क्यों पड़ा ?
2. नारी शिक्षा के लिए ज्योतिबा ने क्या किया ?
3. नगर पालिका सदस्य के रूप में उनकी भूमिका का वर्णन करो।
4. किसानों की दशा का वर्णन करो। उनकी दशा सुधारने के लिए ज्योतिबा ने क्या किया?
5. दलितों की दशा सुधारने में अन्य लोगों के योगदान पर चर्चा करो।